

कविता कृष्णमूर्ति के बहुभाषिक गायन का सांगीतिक विश्लेषण: विभिन्न भारतीय भाषाओं के फिल्मी गीतों के संदर्भ में

Antima Dhupar

Ph. D Scholar, Performing Arts (Music), Lovely Professional University, India

Dr. Amandeep Singh Makkar

Assistant Professor, Department of Performing Arts, Lovely Professional University, India

 [Read the Article Online](#)



Published on 10.09.2026

सार

भारतीय फिल्म संगीत अपनी भाषाई, सांस्कृतिक और शैलीगत विविधता के लिए जाना जाता है। इस परंपरा में कविता कृष्णमूर्ति का बहुभाषिक गायन विशेष महत्व रखता है। उन्होंने हिंदी के साथ तमिल, पंजाबी, कन्नड़, बांग्ला, भोजपुरी, मराठी, ओड़िया, नेपाली, मलयालम सहित अनेक भारतीय भाषाओं में पार्श्वगायन किया है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य विभिन्न भारतीय भाषाओं के चयनित फिल्मी गीतों के माध्यम से उनके बहुभाषिक गायन का सांगीतिक अध्ययन करना है। अध्ययन के लिए दस भारतीय भाषाओं से एक-एक फिल्मी गीत का चयन किया गया है। इन गीतों का गुणात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन उच्चारण, शब्द-स्पष्टता, स्वर-प्रयोग, ताल, लय, भाव-अभिव्यक्ति और गायन-शैली के आधार पर किया गया है। अध्ययन में यह देखा गया है कि कविता कृष्णमूर्ति भाषा, संगीत-संयोजन, क्षेत्रीय शैली और फिल्मी प्रसंग के अनुसार अपनी गायकी को किस प्रकार अनुकूलित करती हैं। अनेक भाषाओं में जिंगल गायन का अनुभव भी उनके उच्चारण और लयबद्धता के विकास में सहायक रहा। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उनका बहुभाषिक गायन केवल भाषाओं की विविधता तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें भाषिक संवेदनशीलता, सांगीतिक अनुकूलन और प्रभावशाली भाव-अभिव्यक्ति भी दिखाई देती है। इस प्रकार उनका गायन भारतीय फिल्म संगीत की बहुभाषिक एवं बहुसांस्कृतिक प्रकृति को समृद्ध करता है।

मुख्य शब्द : कविता कृष्णमूर्ति, बहुभाषिक गायन, भारतीय फिल्म संगीत, पार्श्वगायन, भारतीय भाषाएँ

ABSTRACT

Indian film music is known for its linguistic, cultural, and stylistic diversity. Within this tradition, Kavita Krishnamurti's contribution is particularly significant, as she has performed playback singing in several Indian languages, including Hindi, Bengali, Marathi, Gujarati, Punjabi, Kannada, Tamil, Telugu, Malayalam, Odia, and Assamese. The present study aims to examine her multilingual singing and contribution to Indian film music through selected film songs in different languages. One film song has been selected from each language for the study. These songs are qualitatively and analytically analysed on the basis of pronunciation, clarity of diction, use of melody, rhythm, tala, emotional expression, and singing style. The study explores how Kavita Krishnamurti adapts her voice according to the linguistic characteristics, musical arrangement, regional style, and cinematic context of each song. Her experience of singing jingles in different languages has also contributed to the development of her pronunciation and rhythmic skills. The study reveals that her multilingual singing extends beyond the number of languages in which she has performed and reflects linguistic sensitivity, stylistic adaptability, and effective emotional expression. Thus, her contribution enriches the multilingual and multicultural character of Indian film music.

Keywords: Kavita Krishnamurti, Multilingual Singing, Indian Film Music, Playback Singing, Indian Languages

1. शोध समस्या

कविता कृष्णमूर्ति ने अनेक भारतीय भाषाओं में फिल्मी गीतों का गायन किया है। उपलब्ध लेखों, साक्षात्कारों और अन्य सामग्री में उनके बहुभाषिक गायन का उल्लेख मिलता है, किंतु अधिकांशतः विभिन्न भाषाओं में उनके द्वारा किए गए गायन की जानकारी तक ही सीमित विवरण प्राप्त होता है। इन स्रोतों में यह विस्तार से स्पष्ट नहीं होता कि विभिन्न भाषाओं के फिल्मी गीतों को प्रस्तुत करते समय उन्होंने भाषा की ध्वन्यात्मक विशेषताओं, उच्चारण, स्वर-प्रयोग, ताल-लय, भाव-अभिव्यक्ति, विषयवस्तु तथा क्षेत्रीय लोक-सांस्कृतिक और सांगीतिक परिवेश के अनुसार अपनी गायकी को किस प्रकार ढाला। इसी संदर्भ में प्रस्तुत शोध का उद्देश्य विभिन्न भारतीय भाषाओं के फिल्मी गीतों के माध्यम से कविता कृष्णमूर्ति के बहुभाषिक गायन की सांगीतिक विशेषताओं और उनके योगदान को समझना है। अध्ययन में यह देखा गया है कि विभिन्न भाषाओं और उनके सांगीतिक-सांस्कृतिक परिवेश के अनुरूप उन्होंने अपनी आवाज, गायन-शैली और भाव-अभिव्यक्ति में किस प्रकार अनुकूलन किया तथा किन सांगीतिक तत्वों और विषयगत विशेषताओं के माध्यम से गीतों को प्रभावी रूप प्रदान किया।

2. प्रस्तावना

भारतीय फिल्म संगीत अपनी भाषाई, सांस्कृतिक और शैलीगत विविधता के लिए जाना जाता है। विभिन्न भाषाओं के फिल्मी गीतों में शब्द, उच्चारण, क्षेत्रीय संगीत-परंपरा, भाव-अभिव्यक्ति और फिल्मी प्रसंग का विशेष महत्व होता है। इसलिए बहुभाषिक पार्श्वगायन में केवल धुन और स्वर देना पर्याप्त नहीं होता, बल्कि भाषा की ध्वन्यात्मक विशेषताओं, शब्दों के स्पष्ट उच्चारण तथा गीत के भाव और सांगीतिक शैली को भी आत्मसात करना आवश्यक होता है। कविता कृष्णमूर्ति ने हिंदी के साथ बंगाली, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, मराठी, गुजराती, पंजाबी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में पार्श्वगायन किया है। उनका आरम्भिक संगीत-संस्कार बंगाली तथा रवीन्द्र संगीत से जुड़ा रहा और आगे चलकर उनका गायन विभिन्न भारतीय भाषाओं एवं संगीत-परंपराओं तक विस्तृत हुआ। विभिन्न भाषाओं में जिंगल तथा फिल्मी गीत गाने के अनुभव ने भी उनके बहुभाषिक गायन को आकार दिया। उनके गायन में गीत की भाषा, विषयवस्तु, भाव और सांगीतिक शैली के अनुसार स्वर-प्रयोग में परिवर्तन दिखाई देता है। इसी संदर्भ में प्रस्तुत शोध-पत्र में दस भारतीय भाषाओं के चयनित फिल्मी गीतों का सांगीतिक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि कविता कृष्णमूर्ति विभिन्न भाषाई और सांगीतिक संदर्भों में अपनी गायकी को किस प्रकार अनुकूलित करती हैं तथा इन गीतों के माध्यम से उनके बहुभाषिक पार्श्वगायन की कौन-कौन सी प्रमुख विशेषताएँ सामने आती हैं। (खुराना, 2025)। [indianexpress]



3. साहित्य समीक्षा

खुराना (2025) का 'द इंडियन एक्सप्रेस' में प्रकाशित साक्षात्कार कविता कृष्णमूर्ति के बहुभाषिक गायन को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण प्राथमिक स्रोत है। कृष्णमूर्ति ने बताया कि उनका पहला फिल्मी गीत बंगाली फिल्म श्रीमान पृथ्वीराज में लता मंगेशकर के साथ था, अनेक भाषाओं में जिंगल गाने से उनके उच्चारण और लय को लाभ मिला तथा उनका पहला मौलिक एकल फिल्मी गीत कन्नड़ फिल्म ओदानोंदु कालदल्लि में था। यह साक्षात्कार बहुभाषिक कार्य, उच्चारण और लय के बीच संबंध को स्वयं गायिका के कथन के आधार पर स्थापित करता है (खुराना, 2025)।

'द टाइम्स ऑफ़ इंडिया' के एक साक्षात्कार में कविता कृष्णमूर्ति के बंगाली, तेलुगु, मराठी, अंग्रेज़ी, उर्दू, तमिल, मलयालम, कन्नड़, गुजराती, नेपाली, असमिया, कोंकणी और ओड़िया में गाए गीतों का उल्लेख किया गया है। इसी लेख में उन्होंने बंगाल से अपने गहरे संबंध, बंगाली फिल्म में लता मंगेशकर के साथ अपने आरम्भिक गीत तथा शास्त्रीय संगीत की आधारभूत शिक्षा के महत्व पर चर्चा की। यह स्रोत उनके बहुभाषिक कार्य-क्षेत्र का उपयोगी विवरण देता है (TimesofIndia.com, 2020)।

'अमर उजाला' को दिए साक्षात्कार में कविता कृष्णमूर्ति ने बताया कि दिल्ली में परवरिश के कारण उन्हें हिंदी का स्वाभाविक अनुभव था, जबकि तमिल उनकी मातृभाषा है; उन्होंने कन्नड़, मलयालम और तेलुगु को तमिल के निकट बताया। यह आत्मकथ्य उनके भाषिक परिवेश को समझने में सहायक है और संकेत करता है कि अलग-अलग भाषाओं में गायन के पीछे केवल ध्वनि-अनुकरण नहीं, बल्कि पारिवारिक तथा सामाजिक भाषिक अनुभव भी सक्रिय था (अमर उजाला, 2025)।

'रेडियोबांग्ला' के साक्षात्कार में कविता कृष्णमूर्ति ने रवीन्द्र संगीत को अपने संगीत-संसार की आरम्भिक खिड़की बताया तथा बंगाली संगीतकारों और गायकों से मिली शिक्षा पर गर्व व्यक्त किया। उन्होंने अपने आरम्भिक बंगाली पार्श्वगायन और आर. डी. बर्मन तथा बप्पी लाहिड़ी जैसे संगीतकारों के साथ कार्य का भी उल्लेख किया। यह साक्षात्कार बंगाली संगीत को उनके बहुभाषिक करियर की केवल एक अतिरिक्त भाषा नहीं, बल्कि उनकी संगीत-संवेदना की आधारभूमि के रूप में प्रस्तुत करता है (Joy, 2017)।

धूपर (2024) ने 1980 और 1990 के दशकों के भारतीय विज्ञापन-जिंगल्स में कविता कृष्णमूर्ति के योगदान का अध्ययन किया। लेख में तमिल में गाए गए 'अमूल स्प्रे' जिंगल सहित 12 चयनित जिंगल्स का विश्लेषण किया गया और यह रेखांकित किया गया कि एक ही जिंगल के विभिन्न भाषा-संस्करणों में गाते समय उन्होंने लय, ब्रांड-संदेश और भाव को बनाए रखा। यह अध्ययन वर्तमान शोध के लिए इसलिए महत्वपूर्ण है कि जिंगल-गायन को उनके बहुभाषिक उच्चारण, लयबद्ध अनुशासन और भाषिक अनुकूलन के व्यावहारिक प्रशिक्षण के रूप में समझने का आधार देता है।

कश्यप (2017) के विस्तृत साक्षात्कार में कविता कृष्णमूर्ति ने तमिल में गाए अपने पहले जिंगल, बंगाली फिल्म में आरम्भिक पार्श्वगायन, रवीन्द्र संगीत और कर्नाटक संगीत से पारिवारिक परिचय तथा अलग-अलग प्रकार के गीत गाने के अनुभवों पर चर्चा की। उनके अनुसार हवा हवाई की अभिनयप्रधान तथा चंचल गायन-शैली उनके शास्त्रीय प्रशिक्षण से भिन्न थी और गीत की माँग के अनुसार उन्हें अपनी प्रस्तुति बदलनी पड़ी। यह विवरण भाषा के साथ-साथ चरित्र, फिल्मी प्रसंग और शैली के अनुसार स्वर-अभिनय के अनुकूलन को समझने में सहायक है (कश्यप, 2017)।

‘सुब्रह्मण्यम फाउंडेशन’ के आधिकारिक परिचय में कविता कृष्णमूर्ति के मराठी, गुजराती, पंजाबी, बंगाली, ओड़िया, असमिया, तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़, भोजपुरी, झारखंडी, राजस्थानी और कोंकणी सहित लगभग सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं में गायन का उल्लेख है। परिचय में नेपाली और बांग्लादेशी फिल्मों, अंग्रेजी रिकॉर्डिंग, ग़ज़ल, भक्ति-संगीत, इंडी-पॉप तथा पश्चिमी ऑर्केस्ट्रा के साथ उनके कार्य को भी दर्ज किया गया है। (Subramaniam Foundation, n.d.)।

‘एशियन न्यूज़ इंटरनेशनल’ (ANI) के माध्यम से प्रकाशित साक्षात्कार में कविता कृष्णमूर्ति ने गीत के शब्दों, सुरों और भावों को एक ही बार की रिकॉर्डिंग में सही ढंग से प्रस्तुत करने की कठिनाई पर चर्चा की है। उन्होंने नीचे और मध्य स्वरों से ऊँचे स्वरों तक जाते समय आवाज़ को सहज बनाए रखने की तकनीक के बारे में भी बताया है। यह साक्षात्कार उनके गायन में शब्दों की स्पष्टता, सुरों पर नियंत्रण और भाव-अभिव्यक्ति को समझने में सहायक रहा है। लेख में उनके द्वारा अनेक भारतीय भाषाओं में गीत गाए जाने का उल्लेख किया गया है। अलग-अलग स्रोतों में भाषाओं और गीतों की कुल संख्या अलग-अलग दी गई है। इसलिए इस अध्ययन में किसी निश्चित संख्या का प्रयोग न करके केवल सत्यापित भाषाओं और चयनित गीतों को आधार बनाया गया है (एशियन न्यूज़ इंटरनेशनल, 2024)

4. शोध-विधि

इस शोध में गुणात्मक, वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के लिए दस भारतीय भाषाओं से कविता कृष्णमूर्ति का एक-एक फिल्मी गीत चुना गया है। गीतों का चयन भाषा, फिल्म से संबंध और रिकॉर्डिंग की उपलब्धता के आधार पर किया गया है।

श्रवण एवं विश्लेषण

चयनित गीतों की रिकॉर्डिंग सुनकर उच्चारण, शब्द-स्पष्टता, स्वर, ताल, लय, भाव-अभिव्यक्ति और गायन-शैली का अध्ययन किया गया है। गीत के फिल्मी प्रसंग, पात्र और क्षेत्रीय संगीत-शैली को भी ध्यान में रखा गया है। गीतों से संबंधित जानकारी की पुष्टि उपलब्ध फिल्म-क्रेडिट और विश्वसनीय ऑनलाइन स्रोतों से की गई है। इस प्रकार चयनित गीतों के आधार पर विभिन्न भाषाई फिल्म उद्योगों में कविता कृष्णमूर्ति के योगदान को समझने का प्रयास किया गया है। अध्ययन के परिणाम केवल इन दस गीतों तक सीमित हैं।

5. शोध-अंतर

कविता कृष्णमूर्ति के बहुभाषिक गायन से संबंधित उपलब्ध लेखों, साक्षात्कारों तथा अन्य सामग्री में उनके विभिन्न भारतीय भाषाओं में किए गए पार्श्वगायन का उल्लेख मिलता है। इन स्रोतों में उनके अलग-अलग भाषाओं में गाए गए गीतों, भाषिक अनुभवों, जिंगल गायन तथा विभिन्न संगीतकारों के साथ किए गए कार्य के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। इससे उनके बहुभाषिक गायन के व्यापक स्वरूप का परिचय तो मिलता है, किंतु विभिन्न भारतीय भाषाओं के फिल्मी गीतों के आधार पर उनके गायन की भाषिक, सांगीतिक और भावात्मक विशेषताओं का विस्तृत विश्लेषण अपेक्षाकृत स्पष्ट रूप से सामने नहीं आता। विशेष रूप से उच्चारण, शब्द-स्पष्टता, स्वर-प्रयोग, ताल-लय, भाव-अभिव्यक्ति, गायन-शैली तथा विभिन्न क्षेत्रीय सांगीतिक परिवेश के अनुसार उनके गायन में होने वाले सांगीतिक अनुकूलन और योगदान का व्यवस्थित अध्ययन सीमित दिखाई देता है। प्रस्तुत शोध इसी शोध-अंतर को संबोधित करते हुए विभिन्न भारतीय भाषाओं के फिल्मी गीतों के माध्यम से कविता कृष्णमूर्ति के बहुभाषिक गायन की प्रमुख विशेषताओं, सांगीतिक अनुकूलन और योगदान का विश्लेषण करता है।

6. शोध-प्रश्न

- विभिन्न भारतीय भाषाओं के चयनित फिल्मी गीतों में कविता कृष्णमूर्ति के उच्चारण, शब्द-स्पष्टता, स्वर-प्रयोग, ताल, लय, भाव-अभिव्यक्ति और गायन-शैली की क्या विशेषताएँ दिखाई देती हैं?
- विभिन्न भाषाओं की ध्वन्यात्मक और संगीतात्मक आवश्यकताओं के अनुसार कविता कृष्णमूर्ति के गायन में किस प्रकार का अनुकूलन दिखाई देता है?

7. शोध-उद्देश्य

- कविता कृष्णमूर्ति द्वारा विभिन्न भारतीय भाषाओं में गाए गए चयनित फिल्मी गीतों का उच्चारण, शब्द-स्पष्टता, भाव-अभिव्यक्ति और गायन-शैली के आधार पर विश्लेषण करना।
- चयनित गीतों के माध्यम से विभिन्न भाषाई एवं क्षेत्रीय फिल्म उद्योगों में कविता कृष्णमूर्ति के योगदान तथा भारतीय फिल्म संगीत की बहुभाषिक पहचान को समृद्ध करने में उनकी भूमिका को समझना।

8. कविता कृष्णमूर्ति के बहुभाषिक गायन की पृष्ठभूमि

कविता कृष्णमूर्ति के बहुभाषिक गायन को समझने के लिए उनके प्रारंभिक भाषिक एवं सांगीतिक परिवेश, जिंगल गायन के अनुभव तथा नोटेशन के अभ्यास को ध्यान में रखना आवश्यक है। विभिन्न भाषाओं में जिंगल गायन के निरंतर अनुभव ने उन्हें अलग-अलग भाषाओं के उच्चारण, ध्वनि और लय के साथ कार्य करने का व्यावहारिक अभ्यास दिया। अपने साक्षात्कार में उन्होंने बताया कि नोटेशन लिखने और उसके आधार पर धुन सीखने की आदत ने विभिन्न भाषाओं के गीतों को सीखने और प्रस्तुत करने में उन्हें सुविधा प्रदान की। उनका प्रारंभिक जीवन भी विविध भाषाई एवं सांस्कृतिक परिवेश से जुड़ा रहा। तमिल पारिवारिक पृष्ठभूमि के साथ दिल्ली में रहने के कारण उन्हें विभिन्न भाषाई समुदायों और सांस्कृतिक परंपराओं के संपर्क का अवसर मिला। बंगाली संगीत और रवीन्द्र संगीत से उनका प्रारंभिक जुड़ाव तथा विभिन्न भाषाई समुदायों के साथ संपर्क ने भी भाषाओं के प्रति उनकी सहजता को विकसित करने में योगदान दिया। उनके बहुभाषिक गायन की यह पृष्ठभूमि आगे चलकर विभिन्न भारतीय भाषाओं के फिल्मी गीतों में उनके उच्चारण, लय, स्वर-प्रयोग और भाव-अभिव्यक्ति के अनुकूलन में सहायक रही। इस प्रकार जिंगल गायन का व्यावहारिक अनुभव, नोटेशन का अभ्यास और बहुभाषिक सांस्कृतिक परिवेश कविता कृष्णमूर्ति के बहुभाषिक गायन के विकास की महत्वपूर्ण आधारभूमि के रूप में सामने आते हैं।

9. तालिका 1: कविता कृष्णमूर्ति के बहुभाषिक योगदान के अध्ययन हेतु लिए गए फिल्मी गीत

क्र.	भाषा	चयनित गीत	फिल्म/वर्ष	संगीतकार	गायन-संरचना	अध्ययन का प्रमुख पक्ष
1	हिंदी	“रिम झिम रिम झिम”	1942: अ लव स्टोरी (1994)	आर. डी. बर्मन	कुमार सानू के साथ युगल	कोमल स्वर, वर्षा और प्रेम की भाव-अभिव्यक्ति
2	तमिल	“उप्पु करुवाडु”	मुधलवन (1999)	ए. आर. रहमान	शंकर महादेवन के साथ युगल	तेज लय, लोक-रंग और तमिल शब्दों का लयात्मक निर्वाह
3	पंजाबी	“छल्ला”	देस होया परदेस (2004)	जयदेव कुमार	गुरदास मान और अरविंदर के साथ	लोक-संवेदना, विरह और समूह में स्वर-संतुलन
4	कन्नड़	“ओंदानोदु कालदागा”	ओंदानोदु कालदल्ली (1978)	भास्कर चंदावरकर	एकल	लोकधर्मी धुन में शास्त्रीय स्वर-संयम
5	बांग्ला	“जतोई करो बहाना”	बियेर फूल (1996)	जतिन-ललित	कुमार सानू के साथ युगल	संवादात्मकता, चंचलता और बांग्ला उच्चारण
6	भोजपुरी	“ऐ हमरी भौजी”	तुलसी सोहे हमार अंगना (1986)	चित्रगुप्त	अलका याज्ञिक के साथ स्त्री-युगल	पारिवारिक लोक-संदर्भ और ननद-भौजी संवाद
7	मराठी	“सजनी मोहिनी”	नवरी मिळे नवऱ्याला (1986)	अनिल-अरुण	बहु-गायक गीत	उत्सवी लय और सामूहिक गायन में संतुलित उपस्थिति
8	ओड़िया	“ए मिलन कहानी आमा जीवनरा”	पुआ मोरा काला ठाकुर (1988)	अक्षय मोहंती	उदित नारायण के साथ युगल	प्रेम और मिलन की भावभूमि में सहज स्वर-संवाद
9	नेपाली	“चिट्टी आएना”	ट्रक ड्राइवर (1994)	शम्भूजीत बास्कोटा	एकल	प्रतीक्षा, विरह और नियंत्रित भाव-अभिव्यक्ति
10	मलयालम	“पाथि महा मनसिन”	ई स्नेहतीरथु (सामम) (2004)	डॉ. एल. सुब्रमण्यम	एम. जी. श्रीकुमार के साथ युगल	जटिल ध्वनियों में शब्द-स्पष्टता और आत्मीय युगल-संतुलन

10. बहुभाषाई भारतीय फिल्म संगीत में कविता कृष्णमूर्ति का योगदान: चयनित गीतों का सांगीतिक विश्लेषण

10.1 हिंदी – “रिम झिम रिम झिम”

- गीत की स्थिति एवं विषयवस्तु:
यह गीत 1942: A Love Story का वर्षा और प्रेम पर आधारित गीत है। गीत में बारिश के वातावरण के साथ नायक-नायिका के प्रेम और आपसी अपनापन को प्रस्तुत किया गया है। कविता कृष्णमूर्ति और कुमार सानू की आवाजें इसमें संवाद जैसा प्रभाव देती हैं। उपलब्ध सामग्री में भी इस गीत की प्रमुख विशेषता को कोमल और नियंत्रित गायकी के रूप में बताया गया है। पंक्ति – “भीगी भीगी रुत में तुम हम हम तुम” पंक्ति में बारिश और प्रेम का भाव एक साथ आता है। कविता कृष्णमूर्ति मृदु स्वर, हल्की मीड, नियंत्रित श्वास और कोमल स्वर-प्रयोग करती हैं। “भीगी भीगी” जैसे शब्दों को नरम स्वर में गाने से वर्षा का वातावरण सुनाई देता है।
- प्रयुक्त सांगीतिक तत्व:
मृदु स्वर, मीड, स्वर-प्रवाह, स्पष्ट उच्चारण, ठहराव और नियंत्रित श्वास।
- कविता कृष्णमूर्ति का योगदान:
उन्होंने प्रेम और वर्षा की विषयवस्तु को नायिका के कोमल और भावपूर्ण स्वर के माध्यम से प्रभावी बनाया। इस गीत में उनकी गायकी का योगदान भाव को सरल तरीके से श्रोता तक पहुँचाने में दिखाई देता है।

10.2 तमिल – “उप्पु करुवाडु”

- गीत की स्थिति एवं विषयवस्तु:
यह तेज गति, लोक-रंग और चंचलता वाला तमिल गीत है। इसमें गंभीर प्रेम के स्थान पर हंसी-मजाक और नृत्य का वातावरण दिखाई देता है। कविता कृष्णमूर्ति और शंकर महादेवन की आवाजें गीत में ऊर्जा पैदा करती हैं। गीत मुधलवन से संबंधित है।
- मुख्य शब्द – “उप्पु करुवाडु”
इन शब्दों की प्रस्तुति में कविता कृष्णमूर्ति की आवाज खुली और चंचल सुनाई देती है। वे शब्दों को तेज लय में स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करती हैं।
- प्रयुक्त सांगीतिक तत्व:
तेज लय, स्वर-गति, स्पष्ट उच्चारण, लयबद्धता और ऊर्जापूर्ण स्वर।
- कविता कृष्णमूर्ति का योगदान:
उन्होंने अपनी आवाज को तमिल भाषा की गति और गीत के लोक-हास्य के अनुसार बदला। इससे उनकी बहुभाषाई गायकी में तेज और नृत्यप्रधान शैली को अपनाने की क्षमता दिखाई देती है। यह उनके योगदान का अलग पक्ष है, क्योंकि यहाँ उनकी आवाज “रिम झिम रिम झिम” की तरह कोमल नहीं, बल्कि अधिक ऊर्जापूर्ण है।

10.3 पंजाबी – “छल्ला”

- गीत की स्थिति एवं विषयवस्तु:
“छल्ला” पंजाबी लोक-भाव से जुड़ा गीत है। इसमें विरह, याद और अपनेपन की भावना है। कविता कृष्णमूर्ति के साथ गुरदास मान और अरविंदर की गायन-भागीदारी दर्ज है।
- पंक्ति – “चीची विच पाके छल्ला”
इस पंक्ति में पंजाबी लोक-भाषा का सहज रूप दिखाई देता है। कविता कृष्णमूर्ति शब्दों को बहुत अधिक सजाकर नहीं गातीं, बल्कि लोक-लय और स्पष्ट उच्चारण के साथ प्रस्तुत करती हैं।
- प्रयुक्त सांगीतिक तत्व:
लोक-लय, स्पष्ट उच्चारण, सरल स्वर-प्रयोग, स्वर-प्रवाह और भाव-अभिव्यक्ति।
- कविता कृष्णमूर्ति का योगदान:

उन्होंने पंजाबी लोक-भाव को अपनी प्रशिक्षित पार्श्वगायकी के साथ जोड़ा। उनकी आवाज गीत में स्त्री के विरह और अपनापन को सामने लाती है। इस प्रकार उन्होंने क्षेत्रीय लोक-संवेदना को फिल्मी पार्श्वगायन के माध्यम से प्रभावी रूप दिया।

10.4 कन्नड़ – “ओंदानोंदु कालदागा”

- गीत की स्थिति एवं विषयवस्तु:
यह कविता कृष्णमूर्ति के शुरुआती कन्नड़ फिल्मी गायन का महत्वपूर्ण उदाहरण है। गीत में लोक-स्पर्श है और इसे उन्होंने एकल रूप में गाया है। उपलब्ध स्रोतों के अनुसार यह उनके शुरुआती अपने गीतों में से एक था और इसके लोक-स्पर्श ने उन्हें पहचान दिलाई।
- मुख्य पंक्ति – “ओंदानोंदु कालदागा”
इस पंक्ति में कविता कृष्णमूर्ति का स्वर सीधा, साफ और स्थिर सुनाई देता है। वे अनावश्यक तानों का प्रयोग न करके धुन को सरल रूप में प्रस्तुत करती हैं।
- प्रयुक्त सांगीतिक तत्व:
स्वर-शुद्धता, स्थिर स्वर, नियंत्रित गति, स्पष्ट उच्चारण और लोक-धुन।
- कविता कृष्णमूर्ति का योगदान:
यह गीत उनके बहुभाषी गायन की शुरुआत को दिखाने के साथ-साथ यह भी बताता है कि उन्होंने क्षेत्रीय फिल्म संगीत में अपनी प्रशिक्षित आवाज को स्थानीय लोक-धुन के साथ जोड़ा। इस गीत को उनके करियर में पहचान दिलाने वाले शुरुआती गीत के रूप में भी दर्ज किया गया है।

10.5 बांग्ला – “जतोई करो बहाना”

- गीत की स्थिति एवं विषयवस्तु:
यह प्रेम, मनुहार और हल्की छेड़छाड़ पर आधारित युगल गीत है। इसमें प्रेमी और प्रेमिका के बीच बातचीत दिखाई देती है। कविता कृष्णमूर्ति और कुमार सानू की आवाजें इस संवाद को आगे बढ़ाती हैं। पंक्ति – “जतोई करो बहाना, जतोई बोलो ना ना” पंक्ति में नायिका की शरारत और संकोच दोनों दिखाई देते हैं। कविता कृष्णमूर्ति इसे मृदु और चंचल स्वर में प्रस्तुत करती हैं।
- प्रयुक्त सांगीतिक तत्व:
लय की चपलता, स्पष्ट शब्दोच्चारण, हल्का स्वर-प्रयोग और संवादात्मक गायन।
- कविता कृष्णमूर्ति का योगदान:
उन्होंने बांग्ला भाषा के प्रेमगीत में केवल शब्दों का उच्चारण नहीं किया, बल्कि नायिका के संकोच और चंचलता को अपनी आवाज से व्यक्त किया। यहाँ उनका योगदान भाषा के साथ भाव को अपनाने में दिखाई देता है।

10.6 भोजपुरी – “ऐ हमरी भौजी”

- गीत की स्थिति एवं विषयवस्तु:
यह गीत ननद-भौजी के रिश्ते, घरेलू वातावरण और हंसी-मजाक पर आधारित है। इसे कविता कृष्णमूर्ति और अलका याज्ञिक ने गाया है और यह तुलसी सोहे हमार अंगना से संबंधित है।
- पंक्ति – “ऐ हमरी भौजी”
यह संबोधन ही गीत के पारिवारिक वातावरण को सामने लाता है। कविता कृष्णमूर्ति इसे गंभीर या बहुत अधिक शास्त्रीय स्वर में नहीं गातीं, बल्कि सहज उच्चारण और लोक-लय के साथ प्रस्तुत करती हैं।
- प्रयुक्त सांगीतिक तत्व:
लोक-लय, सहज उच्चारण, हल्की चंचलता, स्वर-संतुलन और संवादात्मक गायन।
- कविता कृष्णमूर्ति का योगदान:

उन्होंने अपनी प्रशिक्षित आवाज को भोजपुरी के घरेलू और लोक वातावरण के अनुसार ढाला। अलका याज्ञिक के साथ उनका गायन दो स्त्री-पात्रों की बातचीत जैसा प्रभाव देता है। इस गीत में उनका योगदान क्षेत्रीय पारिवारिक विषयवस्तु को स्वाभाविक स्त्री-स्वर देना है।

10.7 मराठी – “सजनी मोहिनी”

- गीत की स्थिति एवं विषयवस्तु:
यह बहु-गायक मराठी गीत है। इसमें कविता कृष्णमूर्ति के साथ रानी वर्मा, अनुराधा पौडवाल और शैलेंद्र सिंह की आवाजें हैं। गीत का वातावरण पारिवारिक और उत्सवपूर्ण है।
- मुख्य शब्द – “सजनी मोहिनी”
इन शब्दों में गीत की प्रसन्न और प्रेमपूर्ण भावना दिखाई देती है। कविता कृष्णमूर्ति अपनी आवाज को समूह से अलग करके बहुत आगे नहीं लातीं, बल्कि अन्य गायकों के साथ संतुलित रखती हैं।
- प्रयुक्त सांगीतिक तत्व:
स्वर-संतुलन, लय, समय पर प्रवेश, समूह-गायन और स्पष्ट उच्चारण।
- कविता कृष्णमूर्ति का योगदान:
इस गीत में उनका योगदान एकल प्रदर्शन के बजाय सामूहिक गायन में सही स्वर-संतुलन बनाए रखना है। इससे उनकी सहयोगात्मक और पेशेवर गायकी दिखाई देती है।

10.8 ओड़िया – “ए मिलन कहानी आमा जीवनरा”

- गीत की स्थिति एवं विषयवस्तु:
यह प्रेम और मिलन पर आधारित ओड़िया युगल गीत है। कविता कृष्णमूर्ति और उदित नारायण की आवाजें इसमें हैं। गीत में प्रेमी-प्रेमिका के मिलन की भावना को मधुर धुन के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।
- मुख्य शब्द – “मिलन कहानी”
“मिलन” शब्द गीत की मुख्य विषयवस्तु को स्पष्ट करता है। कविता कृष्णमूर्ति इसे मधुर, कोमल और स्पष्ट स्वर में प्रस्तुत करती हैं।
- प्रयुक्त सांगीतिक तत्व:
मृदु स्वर, स्पष्ट उच्चारण, स्वर-प्रवाह, भाव-अभिव्यक्ति और सहगायन में संतुलन।
- कविता कृष्णमूर्ति का योगदान:
उन्होंने ओड़िया भाषा के प्रेम-भाव को अपनी आवाज में स्वाभाविक रूप दिया। उदित नारायण के साथ उनका स्वर-संतुलन गीत के प्रेमपूर्ण संवाद को प्रभावी बनाता है। यहाँ उनका योगदान क्षेत्रीय भाषा में प्रेम-विषयक स्त्री-स्वर को विश्वसनीय रूप देना है।

10.9 नेपाली – “चिट्ठी आएना”

- गीत की स्थिति एवं विषयवस्तु:
यह गीत प्रतीक्षा और विरह पर आधारित है। गीत में प्रिय व्यक्ति की चिट्ठी न आने से पैदा हुई प्रतीक्षा और बेचैनी दिखाई देती है। यह कविता कृष्णमूर्ति का एकल गीत है।
- पंक्ति – “चिट्ठी आएना”
इस छोटे से वाक्य में प्रतीक्षा और दुख का भाव है। कविता कृष्णमूर्ति इसे धीमे, नियंत्रित और भावपूर्ण स्वर में प्रस्तुत करती हैं। शब्दों के बीच ठहराव इस भाव को और स्पष्ट करता है।
- प्रयुक्त सांगीतिक तत्व:
ठहराव, नियंत्रित स्वर-गति, स्पष्ट उच्चारण, श्वास-नियंत्रण और भाव-अभिव्यक्ति।
- कविता कृष्णमूर्ति का योगदान:

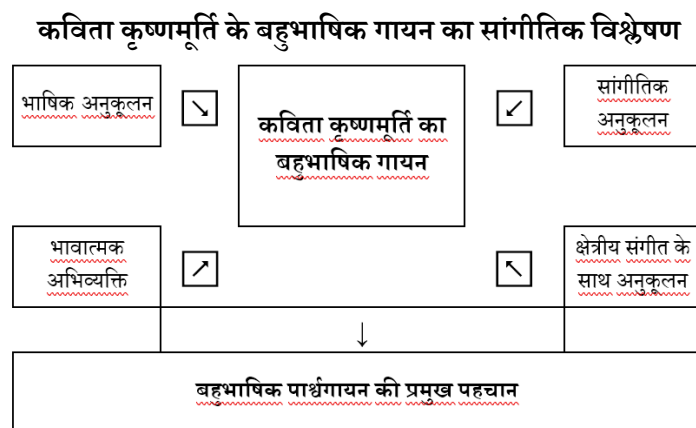
एकल गीत होने के कारण भाव-संचार की पूरी जिम्मेदारी उनकी आवाज पर रहती है। उन्होंने नेपाली भाषा में प्रतीक्षा और विरह को बिना अधिक नाटकीयता के प्रस्तुत किया। इससे उनकी भाषिक और भावात्मक अनुकूलन क्षमता सामने आती है।

10.10 मलयालम – “पाथि महा मनसिन”

- गीत की स्थिति एवं विषयवस्तु:
यह मलयालम फिल्म ई स्नेहीरथु (सामम) से संबंधित भावपूर्ण गीत है। इसे कविता कृष्णमूर्ति और एम. जी. श्रीकुमार ने गाया है। संगीत डॉ. एल. सुब्रमण्यम का है।
- मुख्य शब्द – “पाथि महा मनसिन”
कविता कृष्णमूर्ति इस गीत में आवाज को मृदु और नियंत्रित रखती हैं। मलयालम के लंबे और जुड़े हुए शब्दों को स्पष्ट रखने के लिए श्वास-नियंत्रण और स्वर-स्थिरता का प्रयोग दिखाई देता है।
- प्रयुक्त सांगीतिक तत्व:
श्वास-नियंत्रण, स्वर-स्थिरता, स्पष्ट उच्चारण, स्वर-प्रवाह और मृदु भाव-अभिव्यक्ति।
- कविता कृष्णमूर्ति का योगदान:
उन्होंने अपनी आवाज को मलयालम भाषा की ध्वनि और गीत की शांत भावभूमि के अनुसार ढाला। एम. जी. श्रीकुमार के साथ उनका संतुलित गायन उनकी सहयोगात्मक तथा बहुभाषाई गायकी की क्षमता को दिखाता है।

10.11 चयनित गीतों के माध्यम से कविता कृष्णमूर्ति का योगदान

दसों गीतों के विश्लेषण से कविता कृष्णमूर्ति का बहुभाषाई योगदान अलग-अलग रूपों में सामने आता है। प्रत्येक गीत में उनकी भूमिका केवल भाषा बदलने तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वे गीत की विषयवस्तु, भाव और सांगीतिक शैली के अनुसार अपनी गायकी को बदलती हैं।



चित्र 1: कविता कृष्णमूर्ति के बहुभाषिक गायन के सांगीतिक विश्लेषण का वैचारिक ढाँचा

- पहला प्रमुख योगदान भाषिक अनुकूलन है। हिंदी, तमिल, पंजाबी, कन्नड़, बांग्ला, भोजपुरी, मराठी, ओड़िया, नेपाली और मलयालम जैसी भाषाओं में उन्होंने शब्दों के उच्चारण और ध्वनि के अनुसार अपनी आवाज को ढाला। इस प्रकार उनकी गायकी में भाषा केवल शब्दों का माध्यम नहीं रहती, बल्कि गायन की शैली का भी हिस्सा बनती है।
- दूसरा योगदान विषयवस्तु के अनुसार गायन है। प्रेम के लिए कोमल स्वर, विरह के लिए नियंत्रित और भावपूर्ण स्वर, लोकगीत के लिए सहज स्वर तथा उत्सवी गीत के लिए लयात्मक ऊर्जा का प्रयोग उनके गीतों में दिखाई देता है। इससे स्पष्ट होता है कि वे प्रत्येक गीत को उसकी विषयवस्तु के अनुसार प्रस्तुत करती हैं।
- तीसरा योगदान क्षेत्रीय संगीत के साथ अनुकूलन है। पंजाबी “छल्ला”, भोजपुरी “ऐ हमरी भौजी” और कन्नड़ “ओंदानोंदु कालदागा” जैसे गीतों में वे स्थानीय लोक-रंग को बनाए रखती हैं। वे अपनी प्रशिक्षित गायकी को स्थानीय शैली पर हावी नहीं होने देतीं।

- चौथा योगदान सहगायन और सहयोग है। कुमार सानू, शंकर महादेवन, अलका याज्ञिक, उदित नारायण, एम. जी. श्रीकुमार तथा अन्य गायकों के साथ उनकी प्रस्तुति में अलग-अलग प्रकार का स्वर-संतुलन दिखाई देता है। बहु-गायक गीत “सजनी मोहिनी” में उनका योगदान समूह के साथ संतुलित गायन के रूप में सामने आता है।
- पाँचवाँ योगदान स्त्री-पात्रों को अलग-अलग भाव देना है। उनके गीतों में स्त्री केवल प्रेम व्यक्त करने वाली पात्र नहीं है। वह प्रेम करती है, प्रतीक्षा करती है, विरह व्यक्त करती है, परिवार में संवाद करती है और उत्सव में भाग लेती है। कविता कृष्णमूर्ति ने इन अलग-अलग स्थितियों के लिए अलग स्वर-रूप अपनाए।

इस प्रकार उनके योगदान का मुख्य आधार बहुभाषिकता के साथ सांगीतिक और भावात्मक अनुकूलन है। यही विशेषता उन्हें विभिन्न भारतीय फिल्म संगीत परंपराओं में प्रभावी पार्श्वगायिका के रूप में स्थापित करती है।

11. परिणाम एवं चर्चा

चयनित दस गीतों के विश्लेषण से प्राप्त परिणाम बताते हैं कि कविता कृष्णमूर्ति का बहुभाषाई योगदान केवल उनके द्वारा गाई गई भाषाओं की संख्या से नहीं समझा जा सकता। मुख्य परिणाम यह है कि वे भाषा बदलने के साथ अपनी गायकी के कई पक्षों को भी बदलती हैं। यह परिवर्तन उच्चारण, स्वर-रंग, लय, स्वर-गति और भाव-अभिव्यक्ति में दिखाई देता है।

अध्ययन में यह भी पाया गया कि गीत की विषयवस्तु उनके स्वर-प्रयोग को प्रभावित करती है। प्रेम गीतों में उनकी आवाज अधिक कोमल और मधुर दिखाई देती है, जबकि लोक अथवा तेज गति वाले गीतों में आवाज अधिक खुली और लयप्रधान हो जाती है। विरह और प्रतीक्षा वाले गीतों में वे ठहराव और नियंत्रित स्वर-गति का प्रयोग करती हैं। एक अन्य प्रमुख परिणाम यह है कि कविता कृष्णमूर्ति का शास्त्रीय प्रशिक्षण प्रत्येक गीत में एक समान रूप से प्रदर्शित नहीं होता। वे इसे गीत की आवश्यकता के अनुसार प्रयोग करती हैं। कहीं स्वर-शुद्धता और स्थिरता अधिक दिखाई देती है, कहीं मीड और स्वर-प्रवाह, तो कहीं श्वास-नियंत्रण और लय पर अधिक ध्यान दिखाई देता है। इस प्रकार उनका प्रशिक्षण फिल्मी गीत के लिए व्यावहारिक आधार बनता है। अध्ययन से यह भी सामने आता है कि उन्होंने क्षेत्रीय भाषाओं के गीतों में अपनी व्यक्तिगत आवाज को बनाए रखते हुए स्थानीय सांगीतिक वातावरण को स्वीकार किया। यह बात उनके बहुभाषाई योगदान को केवल “भाषा बदलकर गाना” नहीं रहने देती, बल्कि इसे स्थानीय संगीत के साथ कलात्मक अनुकूलन बनाती है। इन परिणामों से यह भी स्पष्ट होता है कि विभिन्न भारतीय फिल्म उद्योगों में पार्श्वगायन करने के लिए केवल अच्छी आवाज पर्याप्त नहीं होती। भाषा का ज्ञान, उच्चारण, भाव की समझ, ताल-लय, सांगीतिक प्रशिक्षण और सहगायकों के साथ तालमेल भी आवश्यक है। चयनित गीतों में कविता कृष्णमूर्ति इन सभी पक्षों का अलग-अलग रूप में प्रयोग करती दिखाई देती हैं।

इस अध्ययन के आधार पर उनके योगदान को भाषिक अनुकूलन, सांगीतिक अनुकूलन, भाव-अभिव्यक्ति, क्षेत्रीय सांस्कृतिक अनुकूलन और सहयोगात्मक गायन के रूप में समझा जा सकता है। ये सभी पक्ष मिलकर उनके बहुभाषाई पार्श्वगायन की पहचान बनाते हैं।

12. अध्ययन का क्षेत्र

यह अध्ययन कविता कृष्णमूर्ति द्वारा दस भाषाओं में गाए गए दस चयनित फिल्मी गीतों के सांगीतिक विश्लेषण पर आधारित है। इसमें हिंदी, तमिल, पंजाबी, कन्नड़, बांग्ला, भोजपुरी, मराठी, ओड़िया, नेपाली और मलयालम भाषाओं के गीत शामिल हैं।

अध्ययन का मुख्य क्षेत्र गीत की विषयवस्तु, भाषा, उच्चारण, स्वर-प्रयोग, ताल-लय, भाव-अभिव्यक्ति, सहगायन तथा क्षेत्रीय सांगीतिक वातावरण में कविता कृष्णमूर्ति की भूमिका को समझना है। भविष्य में इस अध्ययन को प्रत्येक भाषा के अधिक गीतों, अलग-अलग समय-कालों और विभिन्न संगीतकारों तथा सहगायकों के कार्य के आधार पर आगे बढ़ाया जा सकता है। मूल रिकॉर्डिंग, संगीतकारों के साक्षात्कार और भाषा-विशेषज्ञों की सहायता से अधिक विस्तृत अध्ययन भी किया जा सकता है।

13. अध्ययन की सीमाएँ

इस अध्ययन की पहली सीमा यह है कि प्रत्येक भाषा से केवल एक गीत का चयन किया गया है। इसलिए इन गीतों से संबंधित निष्कर्ष उस भाषा में कविता कृष्णमूर्ति के पूरे कार्य का प्रतिनिधित्व नहीं करते।

दूसरी सीमा यह है कि विश्लेषण उपलब्ध रिकॉर्डिंग और प्रकाशित गीत-क्रेडिट पर आधारित है। मूल स्टूडियो रिकॉर्डिंग के समय संगीतकार द्वारा दिए गए निर्देश, रिकॉर्डिंग नोट्स और अन्य आंतरिक जानकारी उपलब्ध नहीं है।

तीसरी सीमा भाषा से संबंधित है। शोधकर्ता सभी चयनित भाषाओं की मातृभाषी नहीं है। इसलिए उच्चारण से संबंधित टिप्पणियाँ मुख्य रूप से श्रवण-आधारित हैं और उन्हें पूर्ण भाषावैज्ञानिक निष्कर्ष नहीं माना जाना चाहिए।

इसके अतिरिक्त डिजिटल मंचों पर उपलब्ध जानकारी में गीत के पुनर्प्रकाशन वर्ष और मूल फिल्म वर्ष में अंतर हो सकता है। इसलिए उपलब्ध होने पर मूल फिल्म या साउंडट्रैक की जानकारी को प्राथमिकता दी गई है।

14. निष्कर्ष

दस भारतीय भाषाओं के चयनित फिल्मी गीतों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि कविता कृष्णमूर्ति का बहुभाषिक गायन केवल अनेक भाषाओं में गाने तक सीमित नहीं है। उन्होंने भाषा, विषयवस्तु, भाव और सांगीतिक शैली के अनुसार अपनी गायकी को अनुकूलित किया है। उनके गायन में स्पष्ट उच्चारण, स्वर-तकनीक, लय-बोध, भाव-अभिव्यक्ति और क्षेत्रीय सांगीतिक परिवेश के अनुरूप स्वर-प्रयोग प्रमुख रूप से दिखाई देता है। इस प्रकार कविता कृष्णमूर्ति का बहुभाषिक पार्श्वगायन भाषिक एवं सांगीतिक अनुकूलन और भावात्मक विविधता का महत्वपूर्ण उदाहरण है। चयनित गीतों के आधार पर उनका योगदान भारतीय फिल्म संगीत की बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक पहचान को समृद्ध करता है।

15. संदर्भ

- अमर उजाला. (2025, 7 फ़रवरी). गायिका कविता कृष्णमूर्ति ने कहा—महाकुंभ का न्योता मिला तो लगा बहुत अच्छा. अमर उजाला. <https://www.amarujala.com/uttar-pradesh/allahabad/kavita-krishnamurthy-interview-when-i-got-the-invitation-for-mahakumbh-i-felt-very-happy-allahabad-news-c-13-1-pry1001-116193-2025-02-07>
- एशियन न्यूज़ इंटरनेशनल. (2024, 31 जनवरी). 'हवा हवाई' को एक ही बार में गाना कठिन था: कविता कृष्णमूर्ति ने श्रीदेवी के लिए गायन को याद किया. द प्रिंट. <https://theprint.in/feature/difficult-to-sing-hawa-hawai-in-one-stretch-kavita-krishnamurti-recalls-singing-for-sridevi/1947378/>
- कविता कृष्णमूर्ति द्वारा रिकॉर्ड किए गए गीतों की सूची. (सा.ति.). विकिपीडिया में. 26 सितंबर 2026 को पुनःप्राप्त, https://en.wikipedia.org/wiki/List_of_songs_recorded_by_Kavita_Krishnamurti
- कश्यप, एस. (2017, 27 नवंबर). गीतों की यात्रा: जिंगल्स, पार्श्वगायन और संगीत के प्रति अपने प्रेम की पुनः खोज पर कविता कृष्णमूर्ति. योरस्टोरी. <https://yourstory.com/2017/11/song-kavita-krishnamurthy-jingles-playback-rediscovering-love-music>
- कुमार, ए. (2021, 9 सितंबर). कविता कृष्णमूर्ति की नई संगीत-शृंखला. द हिंदू. <https://www.thehindu.com/entertainment/music/kavita-krishnamurtis-new-music-series/article36379306.ece>
- कुसनूर, एन. (2019, 5 दिसंबर). कविता कृष्णमूर्ति: 'मैं श्रोताओं की मनोदशा के अनुसार गाती हूँ'. द हिंदू. <https://www.thehindu.com/entertainment/movies/kavita-krishnamurti-i-sing-according-to-the-audiences-mood/article30191064.ece>
- खुराना, एस. (2025, 18 मई). कविता कृष्णमूर्ति: 'लता जी के लिए डबिंग करना मेरे जीवन का सर्वोत्तम सीखने वाला चरण था'. द इंडियन एक्सप्रेस. <https://indianexpress.com/article/express-sunday-eye/dubbing-for-lataji-was-the-best-learning-phase-of-my-life-10012541/>
- जॉय. (2017, 6 नवंबर). 'रवीन्द्र संगीत से मिले अपने संस्कारों पर मुझे गर्व है'. रेडियोबांग्लानेट. <https://radiobanglanet.com/kavita-krishnamurthy-interview/>
- टाइम्सऑफ़इंडिया.कॉम. (2020, 17 जनवरी). संगीत में सफलता या असफलता नहीं होती, यह पूरी तरह लगन का विषय है: कविता कृष्णमूर्ति. द टाइम्स ऑफ़ इंडिया. <https://timesofindia.indiatimes.com/tv/news/bengali/there-is-no-success-or-failure-in-music-it-is-all-about-passion-kavita-krishnamurthy/articleshow/73324802.cms>
- धूपर, ए. (2024). 1980 और 1990 के दशकों की प्रतिध्वनियाँ: प्रतिष्ठित जिंगल्स के माध्यम से भारतीय विज्ञापन में पद्मश्री कविता कृष्णमूर्ति सुब्रमण्यम का योगदान. स्वर सिंधु: नेशनल पीअर-रिव्यूड/रेफरीड जर्नल ऑफ़ म्यूज़िक, 12(3), 442–452. <https://swarsindhu.pratibha-spandan.org/wp-content/uploads/v12i03a68.pdf>
- धूपर, ए., & मक्कड़, ए. एस. (2023a). विभिन्न संगीत-विधाओं में पद्मश्री कविता कृष्णमूर्ति सुब्रमण्यम के बहुमुखी सांगीतिक योगदान का अध्ययन. स्वर सिंधु: नेशनल पीअर-रिव्यूड/रेफरीड जर्नल ऑफ़ म्यूज़िक, 11(2), 23–35. <https://swarsindhu.pratibha-spandan.org/wp-content/uploads/v11i02a05.pdf>

- धूपर, ए., & मक्कड़, ए. एस. (2023b). कविता कृष्णमूर्ति की संगीत-यात्रा: भारतीय संगीत में उनके योगदान, प्रभाव और विरासत का अध्ययन. स्वर सिंधु: नेशनल पीअर-रिव्यूड/रेफरीड जर्नल ऑफ़ म्यूज़िक, 11(1), 80–92. <https://swarsindhu.pratibha-spandan.org/wp-content/uploads/v11i01a12.pdf>
- सुब्रमण्यम फाउंडेशन. (सा.ति.). कविता कृष्णमूर्ति सुब्रमण्यम. <https://subramaniamfoundation.org/kavita-krishnamurti-subramaniam/>

References

- Dhupar, A. (2024). Echoes of the 80's & 90's: Padmashri Kavita Krishnamurti Subramaniam's contribution to Indian advertising through iconic jingles. *Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music*, 12(3), 442–452. <https://swarsindhu.pratibha-spandan.org/wp-content/uploads/v12i03a68.pdf>
- Dhupar, A., & Makkar, A. S. (2023a). Exploring Padmashri Kavita Krishnamurti Subramaniam's versatile musical contributions across genres. *Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music*, 11(2), 23–35. <https://swarsindhu.pratibha-spandan.org/wp-content/uploads/v11i02a05.pdf>
- Dhupar, A., & Makkar, A. S. (2023b). The musical journey of Kavita Krishnamurti: Exploring her contributions, influences, and legacy in Indian music. *Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music*, 11(1), 80–92. <https://swarsindhu.pratibha-spandan.org/wp-content/uploads/v11i01a12.pdf>
- Joy. (2017, November 6). "Proud of my grooming in Tagore." *RadioBanglaNet*. <https://radiobanglanet.com/kavita-krishnamurthy-interview/>
- Kashyaap, S. (2017, November 27). On song: Kavita Krishnamurthy on jingles, playback and rediscovering her love for music. *YourStory*. <https://yourstory.com/2017/11/song-kavita-krishnamurthy-jingles-playback-rediscovering-love-music>
- Khurana, S. (2025, May 18). Kavita Krishnamurthy: "Dubbing for Lataji was the best learning phase of my life." *The Indian Express*. <https://indianexpress.com/article/express-sunday-eye/dubbing-for-lataji-was-the-best-learning-phase-of-my-life-10012541/>
- Kumar, A. (2021, September 9). Kavita Krishnamurti's new music series. *The Hindu*. <https://www.thehindu.com/entertainment/music/kavita-krishnamurtis-new-music-series/article36379306.ece>
- Kusnur, N. (2019, December 5). Kavita Krishnamurti: "I sing according to the audience's mood." *The Hindu*. <https://www.thehindu.com/entertainment/movies/kavita-krishnamurti-i-sing-according-to-the-audiences-mood/article30191064.ece>
- Subramaniam Foundation. (n.d.). Kavita Krishnamurti Subramaniam. <https://subramaniamfoundation.org/kavita-krishnamurti-subramaniam/>
- TimesofIndia.com. (2020, January 17). There is no success or failure in music, it is all about passion: Kavita Krishnamurthy. *The Times of India*. <https://timesofindia.indiatimes.com/tv/news/bengali/there-is-no-success-or-failure-in-music-it-is-all-about-passion-kavita-krishnamurthy/articleshow/73324802.cms>
- Verma, S. (2025, February 7). Gayika Kavita Krishnamurti ne kaha—Mahakumbh ka nyota mila to laga bahut achchha [Singer Kavita Krishnamurti said—Receiving the invitation to the Mahakumbh felt wonderful]. *Amar Ujala*. <https://www.amarujala.com/uttar-pradesh/allahabad/kavita-krishnamurthy-interview-when-i-got-the-invitation-for-mahakumbh-i-felt-very-happy-allahabad-news-c-13-1-pry1001-116193-2025-02-07>
- "Difficult to sing 'Hawa Hawai' in one stretch": Kavita Krishnamurti recalls singing for Sridevi. (2024, January 31). *ThePrint*. <https://theprint.in/feature/difficult-to-sing-hawa-hawai-in-one-stretch-kavita-krishnamurti-recalls-singing-for-sridevi/1947378/>
- List of songs recorded by Kavita Krishnamurti. (n.d.). In *Wikipedia*. Retrieved September 26, 2026, from https://en.wikipedia.org/wiki/List_of_songs_recorded_by_Kavita_Krishnamurti